

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सीडीओई ने '2026 में वैश्विक शांति: चुनौतियां और संभावनाएं'
विषय पर किया विशेष व्याख्यान आयोजित**

नई दिल्ली, 28 अगस्त 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (CDOE) ने नेल्सन मंडेला पीस एवं कॉन्फ्लिक्ट रेजोल्यूशन केंद्र (NMCPCR) के सहयोग से CDOE कॉन्फ्रेंस हॉल में "2026 में वैश्विक शांति: चुनौतियां और संभावनाएं" विषय पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया। यह कार्यक्रम जेएमआई के माननीय कुलपति प्रो. मजहर आसिफ़ के संरक्षण में और जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था।

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया स्थित इंस्टीट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस (IEP) के मुख्य परिचालन अधिकारी (COO) श्री ब्रेट सैविल ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। यह कार्यक्रम CDOE के निदेशक और NMCPCR के प्रोफेसर, प्रो. असलम खान के नेतृत्व में आयोजित किया गया, जबकि NMCPCR के निदेशक प्रो. अबूजर खैरी ने मुख्य वक्ता और उपस्थित लोगों का स्वागत किया।

श्री सैविल ने ग्लोबल पीस इंडेक्स (GPI) के संदर्भ में वैश्विक शांति के बदलते परिदृश्य पर चर्चा की। GPI सामाजिक सुरक्षा, चल रहे संघर्ष और सैन्यीकरण जैसे 23 संकेतकों के माध्यम से शांति का आकलन करता है। उन्होंने बताया कि पिछले 18 वर्षों में से 15 वर्षों में वैश्विक शांति में गिरावट आई है और संघर्षों के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाला, जिसमें बाहरी ताकतों, प्रॉक्सी एक्टर्स और लंबे समय तक चलने वाले संघर्षों की बढ़ती भूमिका शामिल है।

भारत के बारे में चर्चा करते हुए, श्री सैविल ने कहा कि छोटे और अपेक्षाकृत होमोजीनियस देशों के साथ तुलना भारत के आकार, विविधता और भौगोलिक जटिलताओं को ठीक से नहीं दर्शा सकती है। उन्होंने सुझाव दिया कि चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राजील जैसे बड़े देशों के साथ तुलना अधिक सार्थक दृष्टिकोण प्रदान कर सकती है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ड्रोन युद्ध के बढ़ते उपयोग, विशेष रूप से रूस-यूक्रेन संघर्ष में, के बारे में भी बात की और युद्ध के लिए AI और शांति के लिए AI में निवेश के बीच बढ़ते अंतर की ओर ध्यान आकर्षित किया।

NMCPCR के प्रो. राजीव नयन ने व्याख्यान पर प्रतिक्रिया देते हुए शांति को मापने के लिए उपयोग की जाने वाली कार्यप्रणाली और संकेतकों की आलोचनात्मक जांच करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

भारतीय बौद्धिक परंपराओं का ज़िक्र करते हुए, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि शांति को सार्थक और टिकाऊ बनाए रखने के लिए उसके साथ न्याय का होना भी ज़रूरी है।

अपनी समापन टिप्पणी में, प्रोफ़ेसर असलम खान ने इस बात पर ज़ोर दिया कि शांति को केवल युद्ध न होने या किसी एक पैमाने के ज़रिए नहीं समझा जा सकता। उन्होंने एक व्यापक, सिस्टम-आधारित नज़रिए की वकालत की, जो सुरक्षा, विकास, शासन, तकनीक, न्याय, संस्कृति और मानवीय कल्याण की आपस में जुड़ी भूमिकाओं को समझे। उन्होंने स्थानीय संदर्भों और बौद्धिक परंपराओं पर आधारित नज़रिए विकसित करते हुए ग्लोबल इंडेक्स का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया।

व्याख्यान के बाद फैकल्टी सदस्यों, रिसर्च स्कॉलर्स और छात्रों के साथ सवाल-जवाब का एक इंटरैक्टिव सत्र हुआ। कार्यक्रम का समापन NMCPCR के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ. सुधांशु त्रिवेदी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रोफ़ेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी